ISSN – 2277-7911
Impact Factor – 5.077
YOUNG RESEARCHER
A Multidisciplinary Peer-Reviewed Refereed Research Journal
Oct-Nov -Dec 2022
Vol. 11 No. 4

क्रान्तिकारी आन्दोलन और भगत सिंह: एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. लाल बाबू

प्रभारी प्रधानाध्यापक,

सरस्वती विद्या निकेतन (आदर्श विद्यालय) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,रुकुंदी जिला–औरंगाबाद, (बिहार)

***Corresponding Author:* डॉ. लाल बाबू**

DOI - 10.5281/zenodo.24244723

सारांश:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास संघर्ष, त्याग, बलिदान और देशभक्ति की भावना से जुड़ा हुआ है। ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय जनता को अनेक प्रकार के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण का सामना करना पड़ा। अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध देश के विभिन्न भागों में स्वतंत्रता की भावना विकसित हुई। इस संघर्ष में अनेक नेताओं और क्रान्तिकारियों ने अपने-अपने तरीके से योगदान दिया। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को एक व्यापक स्वरूप प्राप्त हुआ। इस आन्दोलन में क्रान्तिकारी विचारधारा का विशेष स्थान रहा, जिसने युवाओं में देश के प्रति समर्पण, साहस और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की भावना पैदा की।

भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास में भगत सिंह का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। वे केवल एक साहसी क्रान्तिकारी ही नहीं, बल्कि एक गंभीर विचारक और समाज परिवर्तन के समर्थक भी थे। उनका मानना था कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल अंग्रेजी शासन से मुक्ति प्राप्त करना नहीं है, बल्कि समाज से शोषण, भेदभाव और असमानता को समाप्त करना भी है। उन्होंने अपने विचारों और गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को जागरूक किया तथा स्वतंत्रता आन्दोलन को नई दिशा देने का प्रयास किया। प्रस्तुत शोध आलेख में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन की पृष्ठभूमि, उसके विकास, प्रमुख घटनाओं तथा भगत सिंह के जीवन, विचारों और योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। साथ ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर उनके प्रभाव और वर्तमान समय में उनके विचारों की प्रासंगिकता को भी समझने का प्रयास किया गया है।

प्रमुख शब्द: क्रान्तिकारी आन्दोलन, भगत सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन, चन्द्रशेखर आजाद, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, क्रान्तिकारी विचारधारा, समाजवादी चिंतन, राष्ट्रीय चेतना, युवा शक्ति एवं सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास संघर्ष, त्याग, बलिदान और देशभक्ति की भावना से भरा हुआ है। लगभग दो सौ वर्षों तक भारत पर ब्रिटिश शासन रहा। इस दौरान अंग्रेजों ने भारतीयों का राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से शोषण किया। उनकी नीतियों के कारण भारतीय किसानों, मजदूरों, व्यापारियों और सामान्य जनता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अंग्रेजों के भेदभावपूर्ण व्यवहार और भारतीयों को उनके

अधिकारों से वंचित रखने की नीति ने देशवासियों में असंतोष पैदा किया। धीरे-धीरे यही असंतोष अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने की इच्छा में बदल गया।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरुआत में अनेक नेताओं ने अंग्रेजी शासन में सुधार लाने के लिए शांतिपूर्ण तरीके अपनाए। उन्होंने सभाओं, प्रार्थना-पत्रों और अपनी माँगों के माध्यम से भारतीयों के अधिकारों की बात उठाई। लेकिन जब इन प्रयासों से कोई विशेष सफलता नहीं मिली, तब देश में उग्र राष्ट्रवादी विचारों और क्रान्तिकारी गतिविधियों का विकास होने लगा। अनेक युवाओं ने यह महसूस किया कि अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए संगठित और मजबूत संघर्ष की आवश्यकता है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में क्रान्तिकारी आन्दोलन ने गति पकड़नी शुरू की। बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब और उत्तर भारत में अनेक क्रान्तिकारी संगठन स्थापित हुए। अनुशीलन समिति, युगांतर, अभिनव भारत, गदर पार्टी और हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे संगठनों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संगठनों से जुड़े युवाओं ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

इसी क्रान्तिकारी परंपरा में भगत सिंह का नाम विशेष महत्त्व रखता है। वे केवल साहसी क्रान्तिकारी ही नहीं, बल्कि एक गंभीर विचारक और देश की सामाजिक समस्याओं को समझने वाले युवा नेता भी थे। उन्होंने स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज में समानता और न्याय की आवश्यकता पर भी बल दिया। उनका मानना था कि सच्ची आजादी तभी संभव है, जब समाज से शोषण और भेदभाव समाप्त हो। इस प्रकार भगत सिंह ने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को नई सोच और दिशा प्रदान की। उनका जीवन, संघर्ष और बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में हमेशा याद किया जाता रहेगा।[1]

भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन का विकास अंग्रेजी शासन की शोषणकारी नीतियों और भारतीय जनता के बढ़ते असंतोष के कारण हुआ। 1857 का विद्रोह अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीयों के व्यापक विरोध का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण था। इस विद्रोह में सैनिकों, किसानों, शासकों और आम जनता ने अलग-अलग क्षेत्रों में भाग लिया। हालांकि अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबा दिया, लेकिन इसने भारतीयों के मन में स्वतंत्रता की भावना को मजबूत किया। इसके बाद अंग्रेजों ने भारत पर अपना शासन और अधिक कठोर बना दिया।

1857 के बाद अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों का भारतीय समाज पर बुरा प्रभाव पड़ा। किसानों पर लगान का बोझ बढ़ता गया और भारतीय कुटीर उद्योगों तथा हस्तशिल्प को भारी नुकसान पहुँचा। भारतीय व्यापार और अर्थव्यवस्था का उपयोग अंग्रेज अपने हितों को पूरा करने के लिए करने लगे। दूसरी

ओर, सरकारी नौकरियों और प्रशासन में भारतीयों के साथ भेदभाव किया जाता था। इन परिस्थितियों के कारण शिक्षित भारतीयों और सामान्य जनता में अंग्रेजी शासन के प्रति विरोध बढ़ने लगा।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसके माध्यम से भारतीय नेताओं को अपनी राजनीतिक माँगें रखने के लिए एक राष्ट्रीय मंच मिला। कांग्रेस के प्रारम्भिक नेताओं ने अंग्रेजी शासन से प्रशासनिक सुधार, भारतीयों की भागीदारी और राजनीतिक अधिकारों की माँग की। लेकिन समय के साथ अनेक युवाओं को यह महसूस होने लगा कि केवल प्रार्थना-पत्रों और माँगों से अंग्रेजी शासन को समाप्त करना संभव नहीं है। इसी सोच ने क्रान्तिकारी विचारधारा को आगे बढ़ने का अवसर दिया।

1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल का विभाजन किए जाने से पूरे देश में विरोध की लहर फैल गई। भारतीय नेताओं और जनता ने इसके विरोध में स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन चलाया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने पर जोर दिया गया। इस आन्दोलन ने युवाओं में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत किया। इसी समय बंगाल और महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी संगठनों की गतिविधियाँ भी बढ़ने लगीं।

इस प्रकार भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का विकास किसी एक घटना के कारण नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे अंग्रेजों की दमनकारी नीतियाँ, आर्थिक शोषण, राजनीतिक भेदभाव और देश को स्वतंत्र कराने की तीव्र इच्छा जैसे अनेक कारण थे। आगे चलकर यही आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्त्वपूर्ण धारा बन गया।

क्रान्तिकारी आन्दोलन का विकास एवं प्रमुख संगठन:

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का विस्तार तेजी से होने लगा। देश के अलग-अलग भागों में युवाओं ने संगठन बनाकर अंग्रेजी शासन का विरोध करना शुरू किया। इन संगठनों का उद्देश्य देश को विदेशी शासन से मुक्त कराना और भारतीयों में स्वतंत्रता की भावना को मजबूत करना था। क्रान्तिकारियों ने अपने विचारों के प्रचार, युवाओं को संगठित करने और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए विभिन्न तरीके अपनाए।

इस आन्दोलन में बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब और उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों का विशेष योगदान रहा। समय के साथ क्रान्तिकारी आन्दोलन में केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय की भावना भी जुड़ने लगी।

बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन: बंगाल भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का एक प्रमुख केन्द्र था। 1905 में बंगाल विभाजन के बाद अंग्रेजी शासन के विरुद्ध यहाँ व्यापक विरोध शुरू हुआ। स्वदेशी आन्दोलन ने युवाओं में देशभक्ति की भावना को बढ़ाया। इसी

वातावरण में अनुशीलन समिति और युगांतर जैसे क्रान्तिकारी संगठनों का विकास हुआ।

इन संगठनों ने युवाओं को संगठित किया और उन्हें देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। बंगाल के क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध साहसिक गतिविधियों के माध्यम से अपना विरोध प्रकट किया।

1908 का मुजफ्फरपुर बम कांड इस दौर की एक प्रमुख घटना थी। इस घटना में खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी शामिल थे। इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार ने क्रान्तिकारियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की। खुदीराम बोस को फाँसी दे दी गई। उस समय उनकी आयु बहुत कम थी। उनके बलिदान ने देश के युवाओं को गहराई से प्रभावित किया और स्वतंत्रता आन्दोलन में नई ऊर्जा पैदा की।[2]

महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ: महाराष्ट्र भी भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। यहाँ राष्ट्रीय चेतना के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और अन्य राष्ट्रवादी नेताओं का विशेष योगदान रहा। उनके विचारों से प्रभावित होकर अनेक युवाओं ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष का रास्ता अपनाया।

विनायक दामोदर सावरकर ने 1904 में अभिनव भारत नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराना और युवाओं में राष्ट्रीय भावना को मजबूत करना था।

महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियों ने अपने विचारों और गतिविधियों के माध्यम से देश में स्वतंत्रता की भावना को आगे बढ़ाया। इस क्षेत्र में विकसित क्रान्तिकारी चेतना का प्रभाव भारत के अन्य भागों में भी पड़ा। इस प्रकार महाराष्ट्र ने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूत बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

गदर आन्दोलन: प्रथम विश्वयुद्ध से पहले विदेशों में रहने वाले भारतीयों के बीच भी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता की भावना तेजी से बढ़ रही थी। विशेष रूप से अमेरिका और कनाडा में रहने वाले भारतीयों ने भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने के लिए संगठित प्रयास शुरू किए। इसी क्रम में 1913 में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में गदर पार्टी की स्थापना हुई। लाला हरदयाल, सोहन सिंह भकना और अन्य प्रवासी भारतीयों ने इस संगठन को मजबूत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गदर पार्टी ने अपने समाचार-पत्र गदर के माध्यम से अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विचारों का प्रचार किया। इसका मुख्य उद्देश्य भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र कराना था। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान पार्टी ने भारत में सशस्त्र विद्रोह की योजना बनाई, लेकिन अंग्रेजी सरकार ने इस प्रयास को कठोरता से दबा दिया। अनेक क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया गया और कई को कठोर सजाएँ दी गईं।

यद्यपि गदर आन्दोलन अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका, फिर भी इसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। इस आन्दोलन ने

विदेशों में रहने वाले भारतीयों को भी देश की स्वतंत्रता के संघर्ष से जोड़ा।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन: 1924 में उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों ने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) नामक संगठन की स्थापना की। रामप्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्रनाथ सान्याल, योगेशचन्द्र चटर्जी तथा अन्य क्रान्तिकारियों ने इसके गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस संगठन का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी शासन को समाप्त करके भारत में एक स्वतंत्र गणराज्य की स्थापना करना था। संगठन के सदस्य युवाओं को स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित करते थे और क्रान्तिकारी गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए संसाधन जुटाने का प्रयास करते थे।

9 अगस्त 1925 को काकोरी रेल कार्रवाई इस संगठन के इतिहास की एक प्रमुख घटना थी। क्रान्तिकारियों ने सरकारी खजाने को ले जा रही रेलगाड़ी से धन प्राप्त किया। उनका उद्देश्य इस धन का उपयोग संगठन की गतिविधियों और स्वतंत्रता संघर्ष के लिए करना था। इस घटना के बाद अंग्रेजी सरकार ने बड़े स्तर पर गिरफ्तारियाँ कीं। मुकदमे के बाद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और रोशन सिंह को फाँसी दे दी गई।[3]

काकोरी कांड ने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को देशभर में पहचान दिलाई। इस घटना ने युवाओं को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने और बलिदान देने की प्रेरणा दी।

क्रान्तिकारी आन्दोलन में भगत सिंह का प्रवेश:

काकोरी कांड और उसके बाद क्रान्तिकारियों को दी गई सजाओं ने भगत सिंह को गहराई से प्रभावित किया। वे बचपन से ही देश की स्वतंत्रता के प्रति जागरूक थे। किशोरावस्था में ही उन्होंने राष्ट्रीय साहित्य, इतिहास और राजनीतिक विचारों का अध्ययन शुरू कर दिया था।

1923 में भगत सिंह ने लाहौर के नेशनल कॉलेज में प्रवेश लिया। इस कॉलेज की स्थापना लाला लाजपत राय से जुड़े राष्ट्रीय शिक्षा प्रयासों के अंतर्गत हुई थी। यहाँ उन्हें इतिहास, राजनीति और साहित्य का अध्ययन करने का अवसर मिला। वे कॉलेज की नाट्य गतिविधियों, छात्र संगठनों और राजनीतिक चर्चाओं में भी सक्रिय रहते थे।

1926 में भगत सिंह ने अपने साथियों के सहयोग से नौजवान भारत सभा की स्थापना की। इस संगठन का उद्देश्य युवाओं में देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करना, सांप्रदायिकता का विरोध करना तथा उन्हें स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए संगठित करना था। सभा के माध्यम से युवाओं को सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया गया।

भगत सिंह की विशेषता यह थी कि वे क्रान्तिकारी गतिविधियों को केवल साहस और बलिदान तक सीमित नहीं रखना चाहते थे। वे अध्ययन, विचार और संगठन को भी उतना ही महत्त्व

देते थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए युवाओं में राजनीतिक समझ और सामाजिक जागरूकता का विकास आवश्यक है।

भगत सिंह का जीवन एवं व्यक्तित्व:

भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर 1907 को पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा गाँव में हुआ था। वर्तमान में यह स्थान पाकिस्तान में स्थित है। उनके पिता का नाम किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती था। उनके परिवार के कई सदस्य राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े हुए थे। उनके चाचा अजीत सिंह और स्वर्ण सिंह भी अंग्रेजी शासन के विरोधी थे। परिवार के इसी वातावरण ने बालक भगत सिंह के मन में देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना को मजबूत किया।

भगत सिंह का बचपन ऐसे समय में बीता जब भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन तेजी से आगे बढ़ रहा था। 1919 में हुए जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला। इस घटना में जनरल डायर के आदेश पर निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलाई गईं। इस घटना से पूरे देश में आक्रोश फैल गया। भगत सिंह के जीवन और राजनीतिक विचारों के विकास में इस घटना को एक महत्त्वपूर्ण प्रेरक प्रसंग माना जाता है।[4]

1920-22 के असहयोग आन्दोलन ने भी उन्हें प्रभावित किया। जब चौरी-चौरा की घटना के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया, तब अनेक युवाओं में आगे के संघर्ष के तरीके को लेकर असंतोष पैदा हुआ। भगत सिंह ने भी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अन्य राजनीतिक और क्रान्तिकारी मार्गों पर विचार करना शुरू किया।

भगत सिंह केवल एक साहसी क्रान्तिकारी नहीं थे, बल्कि वे गंभीर अध्ययन करने वाले विचारक भी थे। उन्होंने इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजवाद और विश्व की क्रान्तिकारी घटनाओं का अध्ययन किया। रूसी क्रान्ति और समाजवादी विचारधारा का भी उनके चिंतन पर प्रभाव पड़ा। वे समझते थे कि भारत की स्वतंत्रता का उद्देश्य केवल अंग्रेजी शासन को समाप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज में फैली असमानता, शोषण और अन्याय को भी दूर करना आवश्यक है।

उनका व्यक्तित्व साहस, अनुशासन, अध्ययनशीलता और देश के प्रति समर्पण का उदाहरण था। उन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य को समर्पित कर दिया। इसी कारण भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महान क्रान्तिकारी और विचारक के रूप में याद किए जाते हैं।

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और भगत सिंह की भूमिका:

1928 में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन में एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक परिवर्तन हुआ। दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में क्रान्तिकारियों की एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में हिन्दुस्तान

रिपब्लिकन एसोसिएशन का पुनर्गठन किया गया और उसके नाम में 'सोशलिस्ट' शब्द जोड़कर इसे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) नाम दिया गया।

इस संगठन में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, भगवतीचरण वोहरा, शिव वर्मा और अन्य क्रान्तिकारियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। संगठन के नाम में समाजवादी शब्द जोड़ने के पीछे एक विशेष विचार था। क्रान्तिकारियों का मानना था कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है। सच्ची स्वतंत्रता तभी संभव है, जब समाज में आर्थिक असमानता, शोषण और अन्याय को समाप्त किया जाए।

HSRA का उद्देश्य भारत में एक स्वतंत्र समाजवादी गणराज्य की स्थापना करना था। इस संगठन ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को सामाजिक और आर्थिक समानता के विचारों से जोड़ने का प्रयास किया। इसके सदस्य मजदूरों, किसानों और युवाओं के बीच जागरूकता फैलाना चाहते थे।

भगत सिंह इस संगठन के प्रमुख वैचारिक कार्यकर्ताओं में से एक थे। वे क्रान्तिकारी आन्दोलन में अध्ययन, राजनीतिक शिक्षा और सामूहिक नेतृत्व को महत्त्व देते थे। उनका विचार था कि स्वतंत्रता का संघर्ष केवल कुछ व्यक्तियों के प्रयासों से सफल नहीं हो सकता। इसके लिए आम जनता की भागीदारी और सामाजिक जागरूकता आवश्यक है।

इस प्रकार भगत सिंह ने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को एक नई वैचारिक दिशा देने का प्रयास किया। उनके विचारों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय का भी विशेष स्थान था।

साइमन कमीशन का विरोध और लाला लाजपत राय की मृत्यु:

1927 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में संवैधानिक सुधारों की समीक्षा के लिए साइमन कमीशन की नियुक्ति की। इस आयोग में एक भी भारतीय सदस्य शामिल नहीं था। इस कारण भारतीय नेताओं और जनता ने इसका विरोध किया। देश के विभिन्न भागों में इसके विरुद्ध प्रदर्शन आयोजित किए गए।

जब 1928 में साइमन कमीशन भारत पहुँचा, तब अनेक शहरों में विरोध प्रदर्शन हुए। 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में भी इसके विरोध में एक बड़ा जुलूस निकाला गया। इसका नेतृत्व पंजाब के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय कर रहे थे। प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हो गए। 17 नवम्बर 1928 को उनका निधन हो गया।[5]

लाला लाजपत राय की मृत्यु से देशभर में शोक और आक्रोश फैल गया। भगत सिंह और उनके साथियों ने इस घटना को अंग्रेजी शासन के दमन का प्रतीक माना। क्रान्तिकारियों ने इस लाठीचार्ज के लिए

जिम्मेदार पुलिस अधिकारी जेम्स ए. स्कॉट को निशाना बनाने की योजना बनाई।

17 दिसम्बर 1928 को लाहौर में पुलिस अधिकारी जॉन पी. सॉन्डर्स की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इस कार्रवाई में भगत सिंह और राजगुरु की भूमिका थी। दरअसल, क्रान्तिकारियों का निशाना स्कॉट था, लेकिन पहचान में हुई गलती के कारण सॉन्डर्स मारा गया। यह घटना भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना बन गई।

इस घटना के बाद भगत सिंह ने अपना रूप बदलकर लाहौर से बाहर निकलने में सफलता प्राप्त की। इस प्रकरण ने उन्हें देशभर में चर्चा का विषय बना दिया और अंग्रेजी सरकार ने उनकी तलाश तेज कर दी।

केन्द्रीय विधान सभा बम कांड, 1929:

8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंके। इस कार्रवाई का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों तथा सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक और औद्योगिक विवाद विधेयक के विरोध में अपनी आवाज उठाना था।

इस घटना का उद्देश्य किसी व्यक्ति की हत्या करना नहीं था, बल्कि अंग्रेजी सरकार और जनता का ध्यान राजनीतिक दमन की ओर आकर्षित करना था। बम इस प्रकार फेंके गए कि किसी की जान न जाए। घटना के बाद भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने वहाँ से भागने का प्रयास नहीं किया, बल्कि स्वयं गिरफ्तारी दी। उन्होंने सभा में पर्चे भी फेंके और 'इंकलाब जिंदाबाद' तथा 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' के नारे लगाए।[6]

गिरफ्तारी के बाद भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने न्यायालय में अपने विचारों को सामने रखा। वे इस मंच के माध्यम से जनता को यह बताना चाहते थे कि उनका संघर्ष केवल सत्ता परिवर्तन के लिए नहीं, बल्कि अन्यायपूर्ण औपनिवेशिक व्यवस्था के विरोध में था।

केन्द्रीय विधान सभा की इस घटना ने देश-विदेश में व्यापक चर्चा पैदा की। भगत सिंह का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रान्तिकारियों में शामिल हो गया। इस घटना ने युवाओं के बीच स्वतंत्रता और क्रान्तिकारी विचारों के प्रति नई रुचि पैदा की।

जेल आन्दोलन और राजनीतिक बंदियों के अधिकार:

केन्द्रीय विधान सभा बम कांड के बाद भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में भगत सिंह ने देखा कि भारतीय राजनीतिक बंदियों के साथ सामान्य अपराधियों की तुलना में भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता था। उन्हें खराब भोजन दिया जाता था और साफ-सफाई, पढ़ने-लिखने

तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ता था।

इस स्थिति के विरोध में भगत सिंह और उनके साथियों ने जेल में भूख हड़ताल शुरू की। उनकी प्रमुख माँग थी कि राजनीतिक बंदियों को उचित भोजन, स्वच्छ वातावरण, पढ़ने-लिखने की सुविधा, समाचार-पत्र और सम्मानजनक व्यवहार दिया जाए। वे चाहते थे कि राजनीतिक कारणों से जेल में बंद भारतीयों के साथ भी उचित और मानवीय व्यवहार किया जाए।[7]

इस भूख हड़ताल के दौरान क्रान्तिकारी जतिन दास का स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता गया। 63 दिनों तक भूख हड़ताल करने के बाद 13 सितम्बर 1929 को उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु से पूरे देश में शोक और आक्रोश फैल गया। विभिन्न स्थानों पर लोगों ने उनके बलिदान को याद किया और राजनीतिक बंदियों के अधिकारों की माँग का समर्थन किया।

जेल आन्दोलन ने भारतीय क्रान्तिकारी संघर्ष को एक नया स्वरूप दिया। इससे स्पष्ट हुआ कि क्रान्तिकारी केवल अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए ही संघर्ष नहीं कर रहे थे, बल्कि वे मानवीय अधिकारों, समानता और सम्मान के लिए भी आवाज उठा रहे थे। भगत सिंह का यह संघर्ष उनके व्यक्तित्व के एक महत्त्वपूर्ण पक्ष को सामने लाता है।

आपके दिए गए भागों को सरल, प्रभावशाली और शोध आलेख के अनुरूप भाषा में संशोधित किया गया है। सभी फोटो, चित्र, वेबसाइट लिंक और अनावश्यक अंग्रेजी शब्द हटा दिए गए हैं। विषय की मूल भावना को बनाए रखते हुए ऐतिहासिक तथ्यों और विचारों को व्यवस्थित रूप दिया गया है।

भगत सिंह की वैचारिक चेतना और समाजवादी दृष्टिकोण:

भगत सिंह के व्यक्तित्व का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उनकी वैचारिक चेतना और समाजवादी सोच थी। प्रारम्भ में उनके मन में देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने की प्रबल भावना थी, लेकिन निरंतर अध्ययन और राजनीतिक अनुभवों के कारण उनके विचारों का दायरा व्यापक होता गया। वे केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहे, बल्कि समाज में फैली गरीबी, शोषण, असमानता और अन्याय जैसी समस्याओं पर भी गंभीरता से विचार करने लगे।

भगत सिंह का मानना था कि अंग्रेजों को भारत से हटाना ही वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है। यदि अंग्रेजी शासन समाप्त होने के बाद भी देश की सत्ता कुछ विशेष वर्गों के हाथों में केंद्रित रहे और आम जनता शोषण तथा गरीबी का सामना करती रहे, तो स्वतंत्रता का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। उनके अनुसार सच्ची आजादी का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को

समान अधिकार, सम्मान और आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हों।[8]

उनकी समाजवादी विचारधारा का मुख्य आधार आर्थिक समानता, मजदूरों और किसानों के अधिकार तथा शोषणमुक्त समाज की स्थापना था। वे साम्राज्यवाद को केवल विदेशी शासन नहीं, बल्कि ऐसी व्यवस्था मानते थे, जिसके माध्यम से एक देश दूसरे देश का राजनीतिक और आर्थिक शोषण करता है। इसलिए वे साम्राज्यवाद के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक शोषण का भी विरोध करते थे।

भगत सिंह ने क्रान्ति का अर्थ केवल सरकार या सत्ता को बदलना नहीं माना। उनके विचार में क्रान्ति एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया थी, जिसके माध्यम से समाज में अन्याय, शोषण और असमानता को समाप्त किया जा सके। वे चाहते थे कि स्वतंत्र भारत में ऐसी व्यवस्था स्थापित हो, जिसमें मजदूरों, किसानों और सामान्य नागरिकों को उचित अधिकार मिलें।

वे युवाओं को केवल भावनाओं के आधार पर संघर्ष करने के बजाय अध्ययन, चिंतन और विचार-विमर्श के माध्यम से अपनी राजनीतिक समझ विकसित करने की प्रेरणा देते थे। उनका विश्वास था कि किसी भी बड़े सामाजिक परिवर्तन के लिए जागरूक और विचारशील युवाओं की आवश्यकता होती है। इस प्रकार भगत सिंह की समाजवादी दृष्टि ने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को एक व्यापक सामाजिक और वैचारिक आधार प्रदान किया।

भगत सिंह के विचारों में धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिकता का विरोध:

भगत सिंह के विचारों में राष्ट्रीय एकता और धर्मनिरपेक्षता का विशेष स्थान था। उनके समय में भारतीय समाज धार्मिक और साम्प्रदायिक आधार पर विभाजित हो रहा था। अंग्रेजी शासन की नीतियों ने भी इन विभाजनों को बढ़ावा दिया। भगत सिंह समझते थे कि साम्प्रदायिकता देश की स्वतंत्रता और सामाजिक एकता के लिए गंभीर चुनौती है।

उनका मानना था कि भारत की स्वतंत्रता का संघर्ष किसी एक धर्म, जाति या समुदाय का आन्दोलन नहीं, बल्कि पूरे देश की जनता का संघर्ष है। वे चाहते थे कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख और अन्य सभी समुदायों के लोग आपसी भेदभाव को भुलाकर स्वतंत्रता आन्दोलन में एक साथ भाग लें। उनके लिए राष्ट्रीय एकता का आधार धर्म नहीं, बल्कि समानता, स्वतंत्रता और आपसी सहयोग था।

भगत सिंह ने नौजवान भारत सभा के माध्यम से युवाओं को साम्प्रदायिक विचारों से दूर रहने और देशहित को सर्वोपरि रखने का संदेश दिया। वे मानते थे कि धर्म के नाम पर समाज में नफरत और विभाजन पैदा करना राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध है। उनके विचारों में सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और सम्मान की भावना दिखाई देती है।

उनकी धर्मनिरपेक्ष और तर्कशील सोच उनके लेखन में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनका प्रसिद्ध लेख मैं नास्तिक क्यों हूँ उनके वैज्ञानिक

दृष्टिकोण, तर्कशीलता और स्वतंत्र चिंतन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। इस लेख में उन्होंने अपने विचारों को तर्क और विवेक के आधार पर प्रस्तुत किया तथा अंधविश्वास के स्थान पर विचार करने और प्रश्न पूछने पर बल दिया। उन्होंने यह लेख अक्टूबर 1930 में लिखा था।

इस प्रकार भगत सिंह के लिए धर्मनिरपेक्षता केवल एक राजनीतिक विचार नहीं थी, बल्कि एक ऐसे समाज की आवश्यकता थी, जिसमें सभी लोग बिना किसी धार्मिक भेदभाव के समान रूप से रह सकें। उनके विचार आज भी राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव और आपसी सम्मान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

भगत सिंह का साहित्यिक एवं पत्रकारिता संबंधी योगदान:

भगत सिंह केवल एक क्रान्तिकारी ही नहीं, बल्कि गंभीर अध्ययन करने वाले लेखक, विचारक और पत्रकार भी थे। उन्होंने अपने लेखों, पत्रों और वक्तव्यों के माध्यम से राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, राजनीतिक जागरूकता और वैज्ञानिक सोच से जुड़े विचारों को समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया।[9]

वे नियमित रूप से पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करते थे। उन्हें इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजवाद और विश्व की क्रान्तिकारी घटनाओं में विशेष रुचि थी। उन्होंने हिन्दी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी सहित विभिन्न भाषाओं के साहित्य तथा राजनीतिक विचारों का अध्ययन किया। उनके लेखन में देश की स्वतंत्रता के प्रति समर्पण के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं को समझने की गंभीरता भी दिखाई देती है।

भगत सिंह के प्रमुख लेखों और वैचारिक रचनाओं में निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

1. मैं नास्तिक क्यों हूँ — इस लेख में उन्होंने अपने तर्कशील विचारों, आत्मविश्वास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया।
2. युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम पत्र — इसमें उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन की दिशा, संगठन, राजनीतिक शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए।
3. क्रान्ति शब्द के अर्थ पर विचार — इसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि क्रान्ति का उद्देश्य केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि अन्यायपूर्ण सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में बदलाव लाना भी है।
4. विद्यार्थियों और युवाओं के लिए संदेश — अपने विचारों और लेखन के माध्यम से उन्होंने युवाओं को देश के प्रति जिम्मेदार बनने, अध्ययन करने और सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

भगत सिंह के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन को केवल भावनात्मक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे विचारों और सामाजिक उद्देश्यों से

जोड़ने का प्रयास किया। वे चाहते थे कि युवा केवल देशभक्ति की भावना से प्रेरित न हों, बल्कि समाज और राजनीति की वास्तविक समस्याओं को भी समझें।

उनके लेख, पत्र और वक्तव्य आज भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा आधुनिक राजनीतिक चिंतन के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री हैं। उनके साहित्यिक योगदान से यह स्पष्ट होता है कि वे एक कर्मशील क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ गंभीर विचारक भी थे।

लाहौर षड्यंत्र मुकदमा और भगत सिंह का ऐतिहासिक संघर्ष:

केन्द्रीय विधान सभा बम कांड के बाद भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया था। इसी दौरान अंग्रेजी सरकार ने भगत सिंह को लाहौर में जॉन सॉन्डर्स की हत्या से जुड़े मामले में भी अभियुक्त बनाया। यह मामला लाहौर षड्यंत्र केस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य इस मुकदमे के माध्यम से क्रान्तिकारी आन्दोलन को दबाना और उसके प्रमुख कार्यकर्ताओं को कठोर दंड देना था।

मुकदमे के दौरान भगत सिंह और उनके साथियों ने न्यायालय की कार्यवाही को अपने राजनीतिक विचारों को जनता तक पहुँचाने का माध्यम बनाया। उन्होंने अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियों, राजनीतिक बंदियों के अधिकारों और भारत की स्वतंत्रता के प्रश्न को प्रमुखता से उठाया। वे न्यायालय में भी अपने विचारों और सिद्धांतों पर दृढ़ रहे।

इस मुकदमे में भगत सिंह के साथ सुखदेव और राजगुरु को भी मृत्युदंड दिया गया। अंततः 23 मार्च 1931 को लाहौर केन्द्रीय कारागार में तीनों क्रान्तिकारियों को फाँसी दे दी गई। उनकी शहादत की खबर फैलते ही पूरे देश में शोक और आक्रोश की लहर फैल गई।

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु का बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्त्वपूर्ण घटना बन गया। उनकी शहादत ने देश के युवाओं को गहराई से प्रभावित किया और स्वतंत्रता की भावना को और मजबूत किया। भगत सिंह ने अपने साहस, विचारों और बलिदान से भारतीय इतिहास में एक विशेष स्थान प्राप्त किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर भगत सिंह का प्रभाव:

भगत सिंह और उनके साथियों का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनका योगदान केवल क्रान्तिकारी गतिविधियों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने युवाओं में राष्ट्रीय चेतना जगाने, समाजवादी विचारों का प्रसार करने और स्वतंत्रता आन्दोलन को नई वैचारिक दिशा देने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनके प्रभाव को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

1. युवाओं में राष्ट्रीय चेतना का विकास: भगत सिंह ने देश के युवाओं को स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने की प्रेरणा दी। उनका साहस, त्याग, अनुशासन और देश के प्रति समर्पण युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

2. स्वतंत्रता आन्दोलन को वैचारिक दिशा: उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक समानता की आवश्यकता पर भी बल दिया। उनके विचारों ने क्रान्तिकारी आन्दोलन में समाजवादी चिंतन को आगे बढ़ाने में योगदान दिया।

3. साम्प्रदायिक एकता का संदेश: भगत सिंह ने धर्म और जाति के आधार पर समाज को बाँटने वाली प्रवृत्तियों का विरोध किया। वे सभी भारतीयों को एकजुट होकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का संदेश देते थे।

4. अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनजागरण: केन्द्रीय विधान सभा बम कांड और जेल में भूख हड़ताल जैसी घटनाओं ने अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियों को जनता के सामने उजागर किया। इन घटनाओं के माध्यम से राजनीतिक बंदियों के अधिकारों और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रश्न पर व्यापक चर्चा हुई।

5. क्रान्ति की व्यापक अवधारणा: भगत सिंह ने क्रान्ति को केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं रखा। उनके अनुसार क्रान्ति का उद्देश्य समाज से शोषण, अन्याय और आर्थिक असमानता को समाप्त करना भी था। इस विचार ने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को एक व्यापक सामाजिक उद्देश्य प्रदान किया।

6. बलिदान और देशभक्ति की प्रेरणा: भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की शहादत ने देशभर के युवाओं को प्रभावित किया। उनका बलिदान स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में साहस और देशभक्ति का प्रतीक बन गया।

इस प्रकार भगत सिंह का योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा। उन्होंने अपने जीवन, विचारों और बलिदान के माध्यम से यह संदेश दिया कि सच्ची स्वतंत्रता केवल विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक समानतापूर्ण, न्यायपूर्ण और शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना भी है। उनके विचार और आदर्श आज भी भारतीय समाज तथा युवाओं को प्रेरित करते हैं।

क्रान्तिकारी आन्दोलन और गांधीवादी राष्ट्रीय आन्दोलन : एक तुलनात्मक अध्ययन:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्तिकारी आन्दोलन और गांधीवादी आन्दोलन दोनों की अपनी विशिष्ट भूमिका रही। इनके उद्देश्य में ब्रिटिश शासन से मुक्ति की समान आकांक्षा थी, लेकिन संघर्ष के तरीकों और राजनीतिक दृष्टिकोण में अंतर था।

महात्मा गांधी ने सत्याग्रह, अहिंसा, असहयोग और सविनय अवज्ञा को स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रमुख माध्यम बनाया। इसके विपरीत क्रान्तिकारी संगठनों ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रत्यक्ष

क्रान्तिकारी कार्रवाई और सशस्त्र प्रतिरोध को अपनाया।

आधार	गांधीवादी आन्दोलन	क्रान्तिकारी आन्दोलन
प्रमुख नेतृत्व	महात्मा गांधी	भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि
प्रमुख पद्धति	सत्याग्रह एवं अहिंसा	क्रान्तिकारी प्रतिरोध
संगठनात्मक आधार	व्यापक जनभागीदारी	गुप्त संगठन एवं युवा समूह
प्रमुख उद्देश्य	स्वराज एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता	औपनिवेशिक सत्ता का अंत तथा सामाजिक परिवर्तन
वैचारिक आधार	सत्य, अहिंसा एवं नैतिकता	राष्ट्रवाद, समाजवाद एवं साम्राज्यवाद-विरोध

यह तुलना दोनों आंदोलनों के बीच अंतर को समझने के लिए उपयोगी है। हालांकि इन्हें एक-दूसरे का पूर्णतः विरोधी मानना उचित नहीं होगा। दोनों ने अलग-अलग तरीकों से ब्रिटिश शासन की वैधता को चुनौती दी और भारतीय जनता में स्वतंत्रता की भावना को मजबूत किया।

भगत सिंह ने गांधीवादी अहिंसा को स्वतंत्रता संघर्ष का एकमात्र मार्ग मानने से असहमति व्यक्त की थी, लेकिन उनका उद्देश्य भी व्यापक राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक परिवर्तन ही था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की समग्र समझ के लिए इन विभिन्न धाराओं के योगदान का संतुलित मूल्यांकन आवश्यक है।

क्रान्तिकारी आन्दोलन की सीमाएँ एवं ऐतिहासिक मूल्यांकन:

भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता की भावना को प्रबल बनाया, लेकिन इसके सामने कुछ व्यावहारिक सीमाएँ भी थीं। अधिकांश क्रान्तिकारी संगठन संसाधनों की कमी, सीमित जनाधार, गुप्त गतिविधियों की अनिवार्यता और ब्रिटिश प्रशासन की कठोर निगरानी से प्रभावित थे।

क्रान्तिकारी संगठनों के पास व्यापक ग्रामीण और शहरी जनता को लंबे समय तक संगठित रखने के लिए पर्याप्त साधन नहीं थे। उनकी गतिविधियाँ प्रायः सीमित समूहों के माध्यम से संचालित होती थीं। ब्रिटिश सरकार ने पुलिस, गुप्तचर व्यवस्था, गिरफ्तारियों और विशेष न्यायिक प्रक्रियाओं के माध्यम से इन संगठनों को कमजोर करने का प्रयास किया।

फिर भी केवल इन सीमाओं के आधार पर क्रान्तिकारी आन्दोलन के ऐतिहासिक महत्त्व को कम करके नहीं आँका जा सकता। इस आन्दोलन ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना को जीवित रखा और राष्ट्रीय स्वतंत्रता को सर्वोच्च राजनीतिक लक्ष्य के रूप में स्थापित किया।

विशेष रूप से भगत सिंह ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को विचार और सिद्धांत का आधार प्रदान किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी राजनीतिक क्रान्ति की सफलता के लिए जनता की चेतना, संगठन

और सामाजिक परिवर्तन आवश्यक हैं। यही कारण है कि उनका ऐतिहासिक मूल्यांकन केवल उनके बलिदान के आधार पर नहीं, बल्कि उनके विचारों और राजनीतिक दृष्टिकोण के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

स्वतंत्र भारत में भगत सिंह की प्रासंगिकता:

भगत सिंह की विचारधारा और उनका व्यक्तित्व स्वतंत्र भारत में भी प्रासंगिक बने हुए हैं। उनके विचार आज के सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक जीवन में अनेक प्रश्नों पर विचार करने की प्रेरणा देते हैं।[10]

वर्तमान समय में जब समाज के सामने आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, सामाजिक भेदभाव, साम्प्रदायिक तनाव और लोकतांत्रिक मूल्यों की चुनौतियाँ उपस्थित हैं, तब भगत सिंह के विचार विशेष महत्त्व रखते हैं।

उन्होंने युवाओं को केवल भावनात्मक देशभक्ति के बजाय ज्ञान, तर्क, अध्ययन और सामाजिक जिम्मेदारी के आधार पर राष्ट्र निर्माण में भाग लेने की प्रेरणा दी थी। उनके अनुसार किसी भी देश का वास्तविक विकास तभी संभव है जब वहाँ नागरिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय को महत्त्व दिया जाए।

भगत सिंह की वैज्ञानिक दृष्टि, धर्मनिरपेक्षता, समाजवादी चिंतन और साम्राज्यवाद-विरोधी विचार आज भी अध्ययन और विमर्श के विषय हैं। उनकी विरासत का वास्तविक सम्मान उनके विचारों को समझने और लोकतांत्रिक तथा न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में उनकी प्रासंगिकता को पहचानने में निहित है।

निष्कर्ष:

भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक धारा थी। इसका विकास ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के शोषण, राजनीतिक दमन, आर्थिक असमानता और राष्ट्रीय अपमान की परिस्थितियों में हुआ। बंगाल की अनुशीलन समिति, युगांतर, महाराष्ट्र का अभिनव भारत, गदर आन्दोलन, हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन तथा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे संगठनों ने इस आन्दोलन को विभिन्न स्तरों पर विकसित किया।

इस आन्दोलन में भगत सिंह का योगदान अत्यंत विशिष्ट और दूरगामी था। उन्होंने क्रान्तिकारी संघर्ष को केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की व्यापक अवधारणा से जोड़ा। उनके विचारों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ-साथ समानता, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक चेतना और शोषणमुक्त समाज की स्थापना का लक्ष्य स्पष्ट दिखाई देता है।

भगत सिंह की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने क्रान्ति को विचार, संगठन और जनचेतना

से जोड़ने का प्रयास किया। उनके लिए क्रान्तिकारी होना केवल साहसिक कार्य करना नहीं था, बल्कि समाज की समस्याओं को समझना, अन्याय का विरोध करना और बेहतर सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लिए संघर्ष करना था।

23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु का बलिदान भारतीय इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना बन गया। उनकी शहादत ने देश के युवाओं में स्वतंत्रता के प्रति नई ऊर्जा और समर्पण की भावना उत्पन्न की। यद्यपि भारतीय स्वतंत्रता अनेक आंदोलनों, राजनीतिक संगठनों, जनसंघर्षों और विभिन्न विचारधाराओं के सामूहिक प्रयासों से प्राप्त हुई, फिर भी क्रान्तिकारी आन्दोलन ने इसे वैचारिक दृढ़ता, साहस और बलिदान की विशिष्ट प्रेरणा प्रदान की।

अंततः कहा जा सकता है कि भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के केवल एक महान क्रान्तिकारी शहीद नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक भारत के उन विचारशील राष्ट्रवादियों में से थे जिन्होंने स्वतंत्रता को सामाजिक न्याय और मानवीय समानता से जोड़कर देखा। उनका जीवन और चिंतन भारतीय इतिहास में सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. चन्द्र, बिपिन; मुखर्जी, मृदुला; मुखर्जी, आदित्य; पणिक्कर, के. एन. एवं महाजन, सुचेता, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1988।
2. चमन लाल (सम्पादक), भगत सिंह रीडर, नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स, 2019।
3. नायर, कुलदीप, शहीद: भगत सिंह—क्रान्ति के प्रयोग, नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स, 2000।
4. नूरानी, ए. जी., भगत सिंह का मुकदमा: न्याय की राजनीति, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996।
5. सिंह, भगत, मैं नास्तिक क्यों हूँ और अन्य रचनाएँ, विभिन्न संकलित संस्करण।
6. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत : 1885–1947, दिल्ली: मैकमिलन इंडिया, 1983।
7. वर्मा, शिव, संस्मरण एवं क्रान्तिकारी आन्दोलन संबंधी लेखन, विभिन्न संस्करण।
8. भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, स्वतंत्रता आन्दोलन के गुमनाम नायक : भगत सिंह, आजादी का अमृत महोत्सव प्रकाशन।
9. दिल्ली अभिलेखागार विभाग, भगत सिंह अभिलेखागार एवं संसाधन केन्द्र, नई दिल्ली।
10. सिंह, भगत, मैं नास्तिक क्यों हूँ, मूल लेख, अक्टूबर 1930; प्रकाशित: समाचार-पत्र द पीपल, 27 सितम्बर 1931।